ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292RNI
REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.-218-219**

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-III, Issues-33, YEAR-July-Sept. 2024

सोशल मीडिया व युवा मनः एक समाजशास्त्री अध्ययन

नेहा चौरसिया

शोध अध्येत्री– लाल बहादुर शास्त्री पी. जी. कॉलेज, मुगलसराय– चंदौली (उ0प्र0) भारत

Received-13.07.2024, Revised-20.07.2024, Accepted-25.07.2024 **E-mail : careerofneha@gmail.com**

सारांशः ***मीडिया की लोगों तक व्यापक पहुंच होती है, लोकतांत्रिक देशों में मीडिया को चतुर्थ स्तंभ की संज्ञा प्रदान की गई है। संचार माध्यमों की विकसित तकनीक के कारण ही आज ग्लोबल विलेज की अवधारणा चरितार्थ हुई है। सोशल मीडिया को ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी के अनुसार ऐसी वेबसाइट और एप्लीकेशन कहा गया है, जो उपभोक्ताओं को सामग्रियां तैयार करने उसे साझा करें में समर्थ बनाता है। संविधान के अनुच्छेद 19 (1) के द्वारा लोगों को भाषण और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता प्रदान की गई है, इसलिए जब इंटरनेट शटडाउन व मीडिया पर नियंत्रण किया जाता है, तो लोगों द्वारा इसका विरोध किया जाता है आज सोशल मीडिया का वर्तमान में उपयोग बढ़ रहा है इसका उपयोग राजनीति, अर्थव्यवस्था व अन्य क्षेत्रों में तेजी से हो रहा है, इसलिए यह समाज के प्रत्येक पहलू को प्रभावित करती है। विशेषकर युवाओं द्वारा इनका उपयोग तेजी से हो रहा है युवाओं के नैतिक और सामाजिक मूल्यों के साथ युवाओं की जीवनशैली और विचारों को भी प्रभावित कर रही है। प्रस्तुत प्रपत्र में सोशल मीडिया की युवाओं पर सकारात्मक व नकारात्मक प्रभाव का उल्लेख किया गया है।***

कुंजीभूत शब्द– लोकतांत्रिक देश, मीडिया, चतुर्थ स्तंभ, ग्लोबल विलेज, इंटरनेट शटडाउन, सोशल मीडिया, अर्थव्यवस्था

प्रस्तावनाः सोशल मीडिया को परस्पर संवाद का वेब आधारित एक ऐसा गतिशील मंच कहा गया है जिसके माध्यम से लोग संवाद करते हैं, आपसी जानकारियों का आदान–प्रदान करते हैं, तकनीकी अर्थ में उपयोगकर्ता जिस मीडिया का उपयोग इंटरनेट आधारित विभिन्न माध्यम जैसे कंप्यूटर, स्मार्टफोन, टैबलेट आदि के द्वारा विचारों की साझेदारी के लिए करते हैं वह सोशल मीडिया है। आज के दौर को सोशल मीडिया और युवक वर्ग का दौर भी कहा जा सकता है। संयुक्त राज्य जनसंख्या कोष यूएनपीपीए की विश्व जनसंख्या रिपोर्ट के मुताबिक विकासशील देशों में भारत सबसे युवा देश है। यहां की 35.6 करोड़ आबादी युवा है। सोशल नेटवर्किंग साइट युवाओं के जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन ला रही है, इंटरनेट मोबाइल एसोसिएशन ऑफ इंडिया द्वारा जारी आंकड़ों के अनुसार भारत के शहरी इलाकों में प्रत्येक चार में से तीन व्यक्ति सोशल मीडिया का उपयोग करते हैं। भारत में सोशल मीडिया पर प्रतिदिन 30 मिनट समय लोगों द्वारा व्यतीत किया जा रहा है, जिसमें विद्यार्थी 82 प्रतिशत युवा 84 प्रतिशत शामिल है। सोशल मीडिया के विभिन्न रूपों फेसबुक, ट्विटर और ब्लॉगिंग जैसी त्वरित क्रिया प्रतिक्रिया देने वाली सोशल साइट के जरिए युवाओं का रुझान आभासी दुनिया की ओर तेजी से बढ़ रहा है। वे जन आंदोलन, गंभीर सामाजिक मुद्दों पर रायशुमारी या प्रतिरोध दर्शाने में भी अपनी गंभीर उपस्थिति दर्ज करा रहे हैं। इस अर्थ में सोशल मीडिया की बढ़ती सामाजिक और मानवीय भूमिका है। युवा शक्ति में अपूर्व ताकत होती है, ऊर्जा होती है। जरूरत होती है उसे सही संकल्प और दिशा देने की, सोशल साइट का युवाओं पर गहरा प्रभाव पड़ता है, यह उनके व्यक्तित्व विकास में सहायक तो है मगर साथ ही इनके अधिकतर उपयोग के कारण कई समस्याओं का कारण भी है, जिनसे सावधान रहने की जरूरत है।

उद्देश्य –
- युवा विकास में सोशल मीडिया की भूमिका का अध्ययन करना।
- युवाओं पर सोशल मीडिया के सकारात्मक नकारात्मक प्रभावों का अध्ययन करना।
- युवाओं के व्यक्तित्व विकास पर इसका क्या प्रभाव पड़ता है, का अध्ययन करना।

पद्धतिशास्त्री परिप्रेक्ष्य– प्रस्तुत प्रपत्र में द्वितीयक स्रोतों के विषय वस्तु विश्लेषण द्वारा संबंधित विषय के निष्कर्ष पर पहुंचने का प्रयास किया गया है। द्वितीयक तथ्यों के संकलन के लिए ऑनलाइन सामग्री किताबें, शोध पत्रों का उपयोग किया गया है।'कुछ प्रमुख व लोकप्रिय सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म इस प्रकार है – **फेसबुक, यूट्यूब, इंस्टाग्राम, स्नैपचौट, ट्विटर, लिंक्डइन व वव्हाट्सएप** इत्यादि।

'सोशल मीडिया से जुड़े कुछ प्रमुख मुद्दे जो युवाओं को प्रभावित करते हैं– जैसे निजता का अधिकार ,इंटरनेट का आपातकाल के समय शटडाउन व अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता इत्यादि।

युवाओं पर सोशल मीडिया के सकारात्मक प्रभाव –
- फेसबुक और ट्विटर के माध्यम से युवाओं द्वारा लोगों से संपर्क स्थापित किया जा रहा है, कोरोना महामारी के समय इसका चौतरफा प्रभाव स्पष्ट नजर आया।
- हम अपने विचारों, फोटो ,वीडियो चाहे तो पूरी दुनिया या अपने दोस्तों के साथ साझा कर सकते हैं।
- वीडियो कॉल के माध्यम से आमने–सामने बैठकर तुरंत लोगों से संजीव वार्तालाप कर सकते हैं।
- सोशल नेटवर्किंग साइट युवाओं को एक नई स्वस्थ आदतें विकसित करने में सहायक है।
- सोशल मीडिया किशोरो को अपनी विशिष्ट पहचान विकसित करने हेतु एक मंच प्रदान करता है व सोशल मीडिया पर अपनी राय व्यक्त कर सकते हैं।
- सोशल मीडिया, युवाओं को अपनी भावनाओं को अभिव्यक्ति करने का अवसर देता है। सशक्त भावों ,विचारों, ऊर्जा के अभिव्यक्ति और सदुपयोग से यह बेहद सकारात्मक प्रभाव उत्पन्न कर सकता है।
- यह युवाओं को उनके आत्मविश्वास और रचनात्मकता को बढ़ाने में मदद करते हैं।

अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक

- यदि सदुपयोग करें सोशल मीडिया ज्ञान प्राप्ति का उत्कृष्ट माध्यम है।
- यह युवाओं में संचार और तकनीकी कौशल विकसित करने में सहायक है।
- सोशल मीडिया मुख्यधारा की आवाज है जो समाज से अलग है।
- सोशल मीडिया एक बेहतरीन शैक्षणिक उपकरण है।

सोशल मीडिया के नकारात्मक परिणाम –

- मानव सामाजिक प्राणी से वर्चुअल प्राणी बनता जा रहा है ,आज लाइव चौट, अपडेटस एवं वीडियो शेयरिंग इत्यादि के माध्यम से कुछ ही मिनट में लोगों से वर्चुअल संबंध स्थापित हो जाता है और असल संसार में लोगों से संबंध संकुचित हो जाते हैं।
- सोशल मीडिया के माध्यम से अश्लीलता ,हिंसा ,ठगी और भ्रष्टाचार के नए चेहरे से नई पीढ़ी पर बुरा प्रभाव पड़ता है।
- युवाओं में अनियंत्रित सोशल मीडिया के उपयोग से इंटरनेट के लत लग जाती है, जिससे उनका शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य प्रभावित होता है।
- सोशल मीडिया के उपयोग और अवसाद की बीच घनिष्ठ संबंध होता है। यह तुलनात्मकता की ओर ले जाता है जो आत्म सम्मान और बॉडी इमेज को नुकसान पहुंचा सकता है।
- एरिक्शन 1968 लिखते हैं कि युवा और माता–पिता के मध्य दूरी बढ़ जाती है, तो आत्मीयता का संकट पैदा हो जाता है। युवा पीढ़ी की स्मार्ट गैजेटस के साथ स्मार्ट बनने की यह लत जीवन के बेहद नीचे पलों में भी नहीं छुटती और रिश्तो को गहराई से नहीं पनपने देती।
- लंबे समय तक साइबर बदमाशी के शिकार लोग अक्सर डिप्रेशन, अलगाव, अकेलापन, तनाव और चिंता में रहते हैं। इन गतिविधियों को उग्र बनाने वाले साइबर बुलिंग के पीछे सोशल मीडिया उपयोगकर्ताओं की नासमझी का बहुत बड़ा हाथ होता है।
- सोशल मीडिया के ज्यादा उपयोग से किशोर उन गतिविधियों पर पर्याप्त समय नहीं देते जो निश्चित रूप से मानसिक क्षमताओं कौशलों को बढ़ाते है।
- युवाओं द्वारा अत्यधिक इंटरनेट के उपयोग के कारण एकाग्रता की कमी होती है जिससे वह अपना अन्य कार्य नहीं कर पाते।
- सामाजिक संबंध जो संपर्क, निकटता, घनिष्ठता के आधार पर दिखाई देते थे, इस आभासी संसार में उनका स्वरूप बदल गया है। संवादहीनता की यह स्थिति संस्कृति के पतन का कारण भी बनती जा रही है।
- सोशल मीडिया के अत्यधिक उपयोग के कारण शारीरिक समस्या जैसे आंख व कमर का दर्द, सिर दर्द, मांसपेशियों में खिंचाव इत्यादि समस्याओं को सामना करना पड़ता है।
- युवाओं द्वारा अपने कार्य सोशल मीडिया के माध्यम से किया जाता है, इसलिए सबसे ज्यादा खतरा साइबर क्राइम का है जिसके माध्यम से धोखाधड़ी ,फिशिंग, हैकिंग इत्यादि कार्य किए जाते हैं जिसे युवाओं के मन मस्तिष्क पर गहरा प्रभाव पड़ता है।

सुझाव – सोशल मीडिया के आने से अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का स्वरूप बदला है, पहले की तरह अंकुश, नियंत्रण और शर्तें अब नहीं रह गई। अब युवाओं द्वारा इससे जुड़कर अपने प्रतिक्रिया, भाव, विचार व्यक्त कर सकते हैं। अतः यह दायित्व सोशल मीडिया प्लेटफार्मो का है की वे विकास से जुड़ी सूचनाओं और कार्यक्रमों की जानकारीया को युवाओं तक पहुंचाएं जिससे कि युवा अपना बेहतर विकास कर सके।

निष्कर्ष – सोशल मीडिया ने देश के युवाओं की पूरी जीवन शैली को प्रभावित किया है इसका असर उनके खान–पान ,वेशभूषा और बोलचाल सभी पर समग्र रूप से परिलक्षित होता है। नैतिक मूल्यों के हनन के ये मुख्य कारण है, इसने यवाओं को सकारात्मक नकारात्मक दोनों तरह से प्रभावित किया। एक संतुलित जीवन परिवार, समाज, संस्कृति और देश के लिए सोशल मीडिया के दोनों पक्षपर हमें खुले मन से विचार करना चाहिए।ज्ञान और विज्ञान के क्षेत्र में इसका प्रयोग बहुत लाभकारी है ,आवश्यकता है सोशल मीडिया का सही रूप में उपयोग किया जाए ।मौजूदा भारत की युवा शक्ति का अगर समाज और राष्ट्र निर्माण हेतु सामूहिक रूप से सजग और सर्तक प्रयोग हो तो सोशल मीडिया की ताकत हमारे देश के लिए वरदान साबित हो सकती है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. Bhatiya Kavita, 2021, "social media virtual se vastvik", Setu Prakashan private , Noida (u.p.)
2. Kumar Surendra shrivtastav ,Mukul doctor, 2017 ,"social media aur Yuva Vikas" media mimansa.
3. Lata Sneha Dr.,2023, "social media aur block lekan," Shri Natraj Prakashan, New Delhi .
4. Meena Ramkalyan Dr., 2023, "social media ka yuvaon per prabhav", "International general of humanity and social science" invention(IJHSSI)
5. Sharma Lakshmi vijay Dr., Naruka santosh ,2018, "Social media ka yuvaon per prabhav"International general of creative research thought (NCERT)
6. Rani Sangeeta Dr.2023, "social media sambhavnayen aur chunautiyan" Shri Natraj Prakashan,New Delhi.

*****